B.Ed. IInd Year

Subject :- Knowledge Language & Curriculum

TOPIC :- स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन सम्बन्धी सिद्धान्त

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा के प्रति अत्यन्त विस्तृत दृष्टिकोण रहा है। उनका मानना था, कि कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को नहीं सिखाता है। सभी व्यक्ति स्वयं ही सीखते है। उनके शिक्षा दर्शन सम्बन्धी आधारभूत सिद्धान्त इस प्रकार है —

⇒ मन को एकाग्र करने की शक्ति, ज्ञान प्राप्त करने की एक कुंजी है।
⇒ स्त्रियो को विशेष रूप से धार्मिक शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।
⇒ बालक तथा बालिका को शिक्षा के समान अवसर प्राप्त होने चाहिए।
⇒ धार्मिक शिक्षा को पुस्तको की अपेक्षा व्यवहार, अन्चरण तथा संस्कारो के द्वारा दिया जाना चाहिए।
⇒ शिक्षा का प्रचार जनसाधारण मे किया जाना चाहिए।
⇒ औद्योगिक उन्नति के लिए तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए।
⇒ छात्र और शिक्षक का सम्बन्ध अधिक से अधिक निकट एवं मधुर होना चाहिए।
⇒ शिक्षा केवल पुस्तको का अध्ययन नही है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

⇒ ज्ञान व्यक्तियों के मन में विद्यमान है। वह स्वयं ही सीखता है।

⇒ शिक्षा से बालक के चरित्र का विकास, मनोबल में वृद्धि और बुद्धि का विकास होता है।

⇒ वचन, मन और कर्म की शुद्धि आत्म नियंत्रण है।

⇒ शिक्षा बालक में आत्मिक निष्ठा और श्रद्धा विकसित करती है तथा बालक में आत्मत्याग की भावना को विकसित करती है।

⇒ पाठ्यक्रम में बालकों के प्रत्येक विषयों को स्थान दिया जाना चाहिए, जिनका अध्ययन करके बालकों का आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों प्रकार का विकास हो।

⇒ बालक के लिए शिक्षक एक मित्र, दार्शनिक तथा पथ-प्रदर्शक है। शिक्षक को बालक के मस्तिष्क में स्थित ज्ञान का पथ प्रदर्शन करना चाहिए।

⇒ शिक्षा से बालक का शारीरिक, मानसिक नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास होना चाहिए।

Scanned with CamScanner